कर्मयोग ही है जीवन का श्रृंगार

पूर्व राज्यमंत्री सुलेखाताई कुंभारे, ब्र.कु.गंगाधर, पूर्व न्यायाधीश ब्र.कु.बग्गा, श्रीराम ठाकुर, ब्र.कु.प्रेमलता तथा अन्य दीप प्रज्जवलित करते हुए।

कामठी। आत्मिक उन्नति एवं तीव्र पुरुषार्थ हेतु राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के लिए एक दिवसीय मौन साधना योगभट्ठी का आयोजन किया गया।

माउण्टआबू से पधारे ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु.गंगाधर ने अपने आध्यात्मिक जीवन एवं ज्ञान-योग के गहन अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया। उन्होने सभी को प्रेरणा देते हुए कहा कि कर्मयोगी जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है। परमात्म-याद में रहकर कर्म करने से ही उसमें उत्कृष्टता आती है। परमात्म अनुभव करने का आधार है अंतर्मुखता। शिव पिता से शक्तियां प्राप्त करने के लिए मन को बाह्य बातों से फ्री करना होगा। एकाग्र मन ही समर्थ संकल्पों में रमण करता है।

पूर्व राज्यमंत्री सुलेखाताई कुंभारे ने कहा कि आज सारी दुनिया का हाल क्या हो गया है हम सभी अनुभवी हैं इसलिए इन परिस्थितियों से उबारने के लिए आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है। उन्होने ब्रह्माकुमारी संस्था की ईश्वरीय सेवाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि सभी वर्ग के लोगों को विशेष रुप से राजनीतिज्ञों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा लेने के लिए एक बार तो ब्रह्माकुमारी संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्टआबू तो अवश्य जाना चाहिए।

पूर्व न्यायाधीश ब्र.कु.बग्गा ने कहा कि पुराने स्वभाव-संस्कार को मिटाकर आत्मिक शक्ति बढ़ाना ही इस योग साधना का लक्ष्य है।

श्रीराम ठाकुर ने कहा कि अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगाकर ही सफल बनाया जा सकता है। पवित्र आचार-विचार द्वारा ही स्वर्णिम दुनिया लायी जा सकती है।

स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.प्रेमलता ने कहा कि आत्मा अपने अंदर की कमी कमजोरियों रूपी अशुद्धि को समाप्त कर सच्चा सोना बन स्वर्णिम सतयुगी दुनिया में जाने के लायक बन सकती है। राजयोग का नियमित अभ्यास सुख-शातिमय जीवन बनाता है। उपस्थित गणमान्य जनों का अभार प्रदर्शन ब्र.कु.राजू ने किया।

मूल्यों के प्रसार का माध्यम बने मीडिया

ब्र.कु.गंगाधर, वरिष्ठ पत्रकार यशवंतजी वंजारी, ब्र.कु.प्रेमलता तथा अन्य पत्रकार समूह चित्र में।

कामठी। ओम शान्ति मीडया के सम्पादक ब्र.कु.गंगाधर ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा पत्रकार बन्धुओं के लिए आयोजित एक दिवसीय स्नेह मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता एवं नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में जितना धारण करेंगे उतना ही प्रभावी असर हमारी लेखनी द्वारा समाज के ऊपर दिखाई देगा। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर ही मीडिया समाज को नई दिशा दिखला सकता है। स्वस्थ चिन्तन का विकास अध्यात्म को अपनाने से ही हो सकता है।

कार्यक्रम में मुख्य रुप से वरिष्ठ पत्रकार यशवंतजी वंजारी, सुदामा जी राखडे, उज्जवल राजबोले, अमरचंद जैन, नंदु कोल्हे आदि अनेक पत्रकारगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.प्रेमलता ने किया।

सशक्त मन से मिलेगी सफलता

प्रश्न :- खुशी का संकल्प करने से वही खुशी हमारे पास लौट कर आएगी। तो क्या संकल्प ही हमारा भाग्य तय कर रहे हैं?

उत्तर :- देखो, दो दुकानदार हैं और एक जैसी ही आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं। एक ने थॉट क्रियेट किया कि कुछ भी हो जाए मैं इस परिस्थिति को पार करूंगा ही और सब कुछ ठीक हो ही जाएगा। वो उस परिस्थिति को पार करने के लिए कोई गलत प्रैक्टिस नहीं करता है, ज्यादा पैसा इकट्ठा करने के लिए वह किसी से कोई धोखाधड़ी नहीं करता है और वह स्थिर चित्त रहता है। उसके पास जो भी कस्टमर आएगा उससे उसको कैसी एनर्जी मिलेगी। आप खुश हैं, स्टेबल हैं तो आपसे जो भी मिलेगा उससे आप अच्छी तरह से बात करेंगे। माना कि उसे पॉजीटिव एनर्जी मिलेगी। दूसरा जो दुकानदार है वह परेशान है, डर में है कि पता नहीं आगे क्या होगा, वो उसी सामान का हो सकता है कि थोड़ा सा और मैन्युपलेट करके ज्यादा लाभ ले ले, चलो कोई तो कस्टमर मेरे पास आया। तो वो उस क्लाइंट के साथ ईमानदारी से व्यवहार नहीं करेगा। क्योंकि वो असुरक्षा की भावना से ग्रसित है। वो यह सोचेगा कि सारे दिन में मेरे पास आज ज्यादा लोग नहीं आये, एक ही कस्टमर आया है तो वह उससे ज्यादा से ज्यादा धन लेने की कोशिश करेगा और साथ ही साथ यह भी चाहेगा कि वह किसी भी तरह से ले लेवे। इस तरह उसका वायब्रेशन्स, उसकी बॉडी लैग्वेज माना कि सब कुछ बदल जाता है। तो जो ग्राहक हैं वो उन दोनों शॉप में से वो किस शॉप में जाना ज्यादा पसंद करेगा? वो स्वत: वहाँ जायेगा जहाँ मोर हाई एनर्जी है, वायब्रेशन है, ईमानदारी है, सच्चाई है। उस दुकानदार का भाग्य तो अपने आप ही बदल जायेगा, इसके लिए उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। ये जो असुरक्षा की भावना से करने की कोशिश

खुशनुमा जीवन जीने की कला

(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारीज से)

-ब्र.कु.शिवानी

कर रहा है कि कुछ हो न जाये, कुछ बुरा न हो जाये, तो उसका भाग्य भी वैसा ही बनेगा। लोग कहते हैं कि देखो ना उसकी दुकान पर ज्यादा लोग क्यों जा रहे हैं, लेकिन मैं यह रियलाइज नहीं करती हूँ कि हमने जो एनर्जी बाहर भेजी वही वापिस मेरे पास आ रही है, जिसके कारण लोग मुझसे दूर हो जाते हैं। वहीं दूसरी ओर वह दुकानदार आशावान है जो हमेशा पॉजीटिव ही सोचता है। उसके पास देने के लिए हमेशा पॉजीटिव वायब्रेशन्स है, जिसके कारण ज्यादा से ज्यादा लोग उसके सम्पर्क में स्वत: ही आते हैं। इसका ये मतलब नहीं है कि हमारा भाग्य कहीं और लिखा जा रहा है या हमारे भाग्य का निर्णय कोई और कर रहा है। यह कोई भी तय नहीं कर रहा है कि कितने लोग किसके दुकान में जायेंगे। इसका निर्णय हम स्वयं ही कर रहे हैं और जो एनर्जी हम बाहर भेजते हैं यह उस पर भी निर्भर करता है। अपने थॉट प्रोसेस के कारण एक ही परिस्थिति में कोई दुकानदार अत्यधिक सफल हो जाता है और कोई कम हो पाता है। उसको सिर्फ एक चीज पर ध्यान देना है और वो है उसकी मेंटल स्ट्रेंथ, ये होगी आपकी यूनिक सेलिंग प्वाइंट। चाहे आप एक बिजनेस में हैं, चाहे आप एक संस्था में हैं। मान लो संस्था के जो प्रमुख हैं वो एक लिस्ट लेकर बैठें हैं, किन-किन लोगों को आज यहाँ से शॉर्टलिस्ट करना है। वो कौन से लोगों को रखेंगे? जो बहुत सारे प्रेशर के अंदर भी स्टेबल रहकर काम कर सकेंगे। फिर वो कम्पनी जो तीन सौ लोगों के साथ काम कर रही थी, आज वही काम सौ लोग कर रहे हैं। उन सौ लोगों के ऊपर क्या आने वाला है? बहुत प्रेशर आने वाला है, जिसे पार करने के लिए क्या चाहिए? लॉट ऑफ इमोशनल स्ट्रेंथ। कहीं भी अगर उन्होंने देखा कि ये तो बहुत कमजोर हैं, ये तो बहुत छोटी सी बात में डरे हुए हैं, इनसे तो ठीक से काम ही नहीं हो रहा है तो किसका नाम लिस्ट में निकाला जायेगा, जो थोड़े से तनाव में भी काम नहीं कर सकते हैं, उसी का नाम सबसे पहले निकाला जाएगा। आपकी मानसिक क्षमता आपके भाग्य की रेखा बन जाती है। (क्रमश:)